International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 6; November 2017; Page No. 19-21

मालती जोशी की कहानी में स्त्री अस्मिता (सन्दर्भ : पिया पीर न जानी)

अशोक कुमार सखवार
पी–एच.डी. हिंदी शोधछात्र, साँची बौद्ध–भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय, बारला, रायसेन, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश
हिंदी में स्त्री अस्मिता, स्वानुभूतियों, स्त्री मन के सूक्ष्म स्पंदनों को अपने लेखन में मजबूती से रखने वाली लेखिकाओं में मालती जोशी, कृष्णा सोबती, मृणाल पाण्डे, उषा प्रियंवदा, ममता कालिया, मृदुला गर्ग, राजी सेठ, मैत्रेयी पुष्पा, नासिरा शर्मा, रमणिका गुप्ता, प्रभा खेतान आदि ने नारी चेतना को जाग्रत करने का कार्य किया है। 'पिया पीर न जानी' कहानी की लेखिका मालती जोशी हिंदी की प्रतिष्ठित महिला कहानीकार हैं। उन्होंने कहानी के माध्यम से पितृसत्तात्मक समाज में स्त्रियों की पारिवारिक स्थिति के कारण उत्पन्न मानसिक संवेदना और स्त्री के प्रतिरोधी स्वर को व्यक्त किया है। पुरषसत्तात्मक समाज में बचपन से ही लड़का–लड़की होने पर परिवार के द्वारा उनके साथ अलग–अलग व्यवहार किया जाने के कारण लड़की के अंतर्मन पर प्रभाव पड़ना शरू हो जाता है। परिवार में दोयम व्यवहार के कारण उसके आचार–विचार परिवर्तित होते चले जाते हैं। उसके अपने निजी निर्णय भी परिवार के द्वारा निर्धारित होते है। परिवार में बच्चे सामाजिक नियम के विरुद्ध कुछ कार्य करते हैं उसका दोष भी उसकी माँ को ही दिया जाता है। लड़की के जन्म लेने और पति के निठल्लेपन का भी जिम्मेदार पत्नी को ही ठेराया जाता है।आधुनिक शिक्षित महिलाए पुरुषसत्तात्मक समाज में कैसे अस्मिता की तलाश में प्रतिरोध कराती हैं।

मूल शब्द: शोषण, उपेक्षित, स्त्री, पुरुषसत्ता, बेटी, भेदभाव, समाज, लड़की, पत्नी, पति, प्रतिरोध।

प्रस्तावना
"स्त्री की स्थिति भी युगों से ऐसी ही चली आ रही है। उसके चारों ओर संस्कारो का ऐसा क्रूर पहरा है कि उसके अंतरतम जीवन की भावनाओं का परिचय पाना ही कठिन हो जाता है।"

महादेवी वर्मा, श्रृंखला की कड़ियाँ
समय परिवर्तन के साथ–साथ आधुनिक स्त्रियों ने सभी जगह अपनी स्थिति दर्ज कराई है। स्त्रियाँ घर से बाहर निकल कर अपने आप को आत्मनिर्भर बना रही हैं। समय सापेक्ष शैक्षिक, राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, परिवर्तन से स्त्रियों की दशा दिशा में परिवर्तन हुआ है लेकिन फिर भी स्त्रियाँ पुरुषों की तुलना में दोयम दर्जे की है। महादेवी वर्मा श्रृंखला की कड़ियाँ पुस्तक में लिखती हैं "केवल स्त्री के दृष्ठिकोण से ही नहीं वरन हमारे सामूहिक विकास के लिए भी यह आवश्यक होता जा रहा है कि स्त्री घर की सीमा के बाहर भी अपना विशेष कार्यक्षेत्र चुनने को स्वतन्त्र हो"[1] स्त्री–पुरुष एक गाड़ी के दो पहिये के समान है। जिसमें दोनों पहियों की आवश्यकता है, एक के बिना दूसरे का ठीक से चलना मुश्किल है।

'पिया पीर न जानी' कहानी की लेखिका मालती जोशी हिंदी की प्रसिद्ध महिला कहानीकार हैं। इनकी कहानियों का रेडियों, टेलीविजन के माध्यम से नाटक रूपांतर प्रसारित हो चुका है। समय–समय पर इन्हें अनेक पुरस्कारों से नवाजा जा चुका है। इनके कहानी संग्रह– पाषान युग, तेरा घर मेरा घर, पिया पीर न जानी, मोरी रंग दी चुनरिया, बाबुल का घर, महकते रिस्ते, औरत एक रात है, मालती जोशी नारी मन की चेतना को रेखांकित करने वाली लेखिका है। हिंदी में महिला अस्मिता को अपने लेखन के केंद्र में लाने वाली लेखिकाओं में कृष्णा सोवती, मृणाल पाण्डे, उषा प्रियंवदा, ममता कालिया, मृदुला गर्ग, राजी सेठ, मैत्रेयी पुष्पा, नासिरा शर्मा, रमणिका गुप्ता, प्रभा खेतान आदि ने नारी चेतना को जाग्रत करने का कार्य किया है। मालती जोशी ने "मध्यवर्गीय परिवारों की गहन मानवीय संवेदनाओ के साथ नारी मन के सूक्ष्म स्पंदनों की पहचान की है"[2] इस तरह हम देखे तो 'पिया पीर न जानी' कहानी के माध्यम से लेखिका स्त्री मन के सूक्ष्म स्पंदनों को व्यक्त कराती हैं।

कहानी समाज के वास्तविक सच्चाई को हमारे सामने लाकर खड़ी कर देती है। कहानी के अनुसार रमा को दो पुत्री हुई रसिका, लतिका जब रमा ने पहली पुत्री रसिका को जन्म दिया तो उस वजह से "उसके पिता बहुत निराश हुए उन्हें बेटे की कामना थी।"[3] आज भी भारतीय समाज में लड़की के जन्म लेने पर लोग दुरूखी होते है। तथा लड़का जन्म लेने पर खुशियाँ मनाते हैं। ज्यादातर परिवार लड़के का जन्मदिन मनाते है वहीं लड़की का जन्मदिन मनाने से परहेज करते हैं। इस तरह का भेदभाव बचपन से ही शुरु हो जाता है। जब रसिका अच्छे नम्बरों से पास होती है तो उसके चाचा के कहने पर वह उपहार के रूप मांगती है "चाचा इस साल मेरा भी वर्थ–डे मनेगा बिलकुल वैसा ही जैसा भैया लोगों का मनता है।"[4] एक बाल मन पर क्या गुजरती होगी जब उसे लड़की होने पर कई कार्यों से वंचित रखा जाता होगा और कहा जाता हो कि तुम लड़की हो ये कार्य नहीं कर सकती जिसमें उसका कोई दोष ही नहीं।

भारतीय समाज में जन्म लेने से पूर्व अनेक लड़कियों की भ्रूण में ही हत्या कर दी जाती है। विडंबना यह है कि ये हत्याऐ पढ़े–लिखे लोग ज्यादातर कर रहे हैं, लड़कों की चाहत में बार–बार भ्रूण में ही परीक्षण करा कर उनके पैदा होने से ही पहले मार दिया जाना आम बात है। ये नहीं देखा जाता महिला के शरीर पर इसका क्या दुष्प्रभाव पड़ता है। उस स्त्री के अंतर्मन पर क्या गुजरती है। रमा भी दो एबार्सन कराने से दुखी होकर सोचती है "इसी पत्थर दिल इंसान के लिए मैंने रसिका के बाद वाली दोनों कन्याओं का गर्भ में ही गला घोंट दिया था"[5] इसी तरह लड़कियों की हत्या भ्रूण में ही होती रही तो लड़कियों की संख्या में, कमी होने पर माँ, बहन, बहु, कहाँ से आएगीं। लेकिन लोग बिना सोचे समझे इस कार्य को

अंजाम देते हैं। गौरतलब है कि इस घृणित कार्य में कई महिलाये भी साथ देती हैं। भ्रूण हत्या रोकने के लिए भारत सरकार ने अनेक नियम बनाये हैं। जिनके तहत दंड का प्रावधान है, लड़की के जन्म लेने पर भारत सरकार तथा राज्य सरकारें कई योजनाओ के तहत आर्थिक मदद भी कराती हैं। जैसे– कन्यादान योजना, लड़कियों के लिए शैक्षिक छात्रवृति, साईकिल बटवाना लेकिन फिर भी लोग भ्रूण हत्या जैसे कुकृत्य को अंजाम देते है।

भारतीय समाज में धर्म, कर्म, पुनर्जन्म, का हवाला देते हुए महिलाओं के लिए ऐसे नियम कानून बनाये ताकि वह हमेशा पुरुषसत्ता के बन्धनों में जकड़ी रहे। सिमोन द वोउवार कहती हैं "स्त्री, पुरुष प्रधान समाज की कृति है वह अपनी सत्ता को बनाये रखने के लिए स्त्री को जन्म से ही अनेक नियमों में ढालता चला गया"6 उसे हमेशा पिता, पति, पुत्र, के संरक्षण में रहने के लिए बाध्य किया। महिलाओं को हमेशा शिक्षा, सत्ता, अर्थ से दूर रखा, कई परिवारों में स्त्रियाँ शिक्षित होने पर भी घर की झूठी शान में उन्हें नौकरी करने से रोका जाता है। ऐसा ही रमा के साथ होता है। वह कहती है "चाहती तो में भी नौकरी कर सकती थी। मेरे पास बी.ए.की डिग्री थी 5–6 साल का अनुभव था पर इनकी रईसी आड़े आ गई"[7] स्त्रियां अपनी अस्मिता की तलाश में बाहर जाकर नौकरी करना चाहती है। आज बदलते परिवेश में स्त्रियाँ आर्थिक रूप से सशक्त होकर अपनी उपस्थिति दर्ज करवा रही हैं। फिर भी अमूमन कई महिलाओं को बिना पति की अनुमति के रुपये खर्च करने की इजाजत तक नहीं दी जाती है भले ही उसका पति निठल्ला हो।

अगर परिवार में किसी का पति कुछ रोजगार नहीं करता है तो इसका सारा दोष उसकी पत्नी को ही दिया जाता है न कि उस व्यक्ति को। रमा अपने पति के बारे में कहती है "बेटे की इस अकर्मण्यता के लिए अम्माजी मुझे ही कोसती–कहतीं एक लक्ष्मी घर में आती है तो घर भर देती है। एक ये ऐसी आई है कि पुरखों की जायदाद भी बिकवा दी"

रमा की दोनों बेटी धीरे–धीरे बड़ी होती है, विकास पढ़ने के लिए नानी के यहाँ चला जाता है। उनके मन में ये भर दिया जाता है कौनसीं तुमारी सगी बहनें हैं। इस प्रकार से तीनों चचेरे भाई, दोनों बहनों से दूरियां बनाने लगते हैं दोनों बहने "भईयों के संरक्षण में एक आश्वस्ति–सी अनुभव करती थीं वहा। जब उसमें व्यवधान पड़ा तो उसने अपने स्नेह का आलंबन बाहर खोजना शुरू कर दिया"[9] रसिका अपने चाचा के क्लिनिक पर कार्य करने वाले माइकल से प्रेम करने लगती है। जब किसी स्त्री को अपने ही घर में बार–बार अपमानित किया जाता है तो वह अपने ही घर में अकेला महसूस करने लगती हैं और एक दिन घर छोड़ने या आत्महत्या को तैयार हो जाती है। ऐसा ही रसिका ने किया। वह अपने ही घर में अपने को दूसरो का बोझ समझने लगी थी क्योंकि उसके पिता के द्वारा कुछ कार्य न किये जाने पर सभी को अपमानित होना पड़ता था। अपने पापा के द्वारा उसके ऊपर हाथ उठाये जाने पर घर छोड़कर माइकल के साथ चली जाती है। उससे शादी कर लेती है। पूरे घर में खलबली मच जाती है। सारा दोष उसकी माँ रमा पर दिया जाने लगा जैसे इस कार्य में उसने सहयोग किया हो परिवारों में आज भी जब घर में बच्चे कुछ सामाजिक मान्यताओं के विरुद्ध कार्य करते हैं तो सारा दोष उनकी माँ पर रख दिया जाता जैसे उन बच्चों के व्यक्तित्य निर्माण में पापा और परिवार की कोई भूमिका ना हो।

लतिका को अम्मा के द्वारा ताने दिए जाने लगे "बड़ी तो सामने नहीं। इसी पर मन की भड़ास निकाल ली। और हर बार यह ताना भी की अब इससे शादी कौन करेगा। भावुक लड़की थी–नहीं सह पाई"[9] और एक दिन मानसिक रूप से परेशान होकर आत्महत्या कर लेती है। इस प्रकार से दोनों लड़कियां अपने–अपने तरीके से आजाद हो जाती हैं। उनकी माँ परेशान रहने लगती है। वह सिर्फ उन्हीं लड़कियों के सहारे उस घर में मन लगाने की कोशिश कर रही थी जब दोनों ही लड़कियां उससे दूर हो जाती है। उसका किसी कार्य में मन नहीं लगता एक दिन जब रमा बैठी होती है तो उसका पति कहता है। चाय बना कर ले आओ, रमा जबाब में कहती है। "तो जाकर बना क्यों नहीं लेते? इस बार उनकी आँखे फैल गई–मैं चाय बनाऊँगा"[10] पुरुषवादी समाजिक परिवार में महिला होते हुए पुरुष खाना बनाये पुरुषों को पसंद नहीं होता चाहे महिला उस दिन बीमार दुरूखी क्यों न हों, कार्य करने का मन हों या न हों महिला को ही करना पड़ता है। उसके द्वारा किये जा रहे घर के कार्यों की कोई गिनती भी नहीं होती उससे हमेशा बोला जाता है करती ही क्या हो?

जब विकास को पता चलता है तो वह अपनी पत्नी विभा के साथ घर मिलने आता है और कहता है बड़ी माँ ये कैसे हो गया दोनों ही ने हमारे घर की इज्जत ही खराब कर दी। वंदना जबाब में कहती है, "इन रिश्तों में अगर जरा भी दम बाकी होता न विकास, तो लड़कियां अपने आपकों इतना असुरक्षित, इतना असहाय न समझती अपनों पर जरा भी भरोसा होता तो बाहर आश्रय न खोजतीं। पर उन्हें तो हमेशा यही लगता रहा की इस घर पर बोझ हैं। दोनों ने अपने–अपने ढंग से इस बोझ को हल्का कर दिया।"[11] ये सच है जब किसी व्यक्ति को अपने ही घर में महत्व नहीं दिया जाता तो वह अपनों की तलास अन्य में ढूढ़ने लगता है। जब उसे खुशी नहीं मिलती तो वह दूसरे तरीके (आत्महत्या) से खुश होने की कोशिश करता है। राजेंद्र यादव आदमी की निगाह में औरत किताब में लिखते हैं "कोई भी औरत आत्महत्या या अध्यात्म का चुनाव स्वेच्छा से नहीं करती। उसके पीछे हमेशा सामाजिक और आर्थिक मजबूरियों के जाने–अनजाने दबाव होते हैं।"[12] महिलाओं को उनके घरों में ही उपेक्षित कर दिया जाता है। उन्हें कई तरीके से दबाने की कोशिश की जाती है।

कुछ दिनों के बाद रसिका अपनी माँ से मिलने आती है तो उसकी माँ उससे घर से बाहर मिलने को जाती है। तब वंदना अपनी बेटी से कहती" गुडिया तेरे चाचा तुझे डॉक्टर बनाना चाहते थे, पर में क्या बनना चाहती थी यह मुझसे कभी नहीं पूछा गया।"[13] लड़की के जन्म होने से ही उसके ऊपर पहनने–ओड़ने, उठने–बैठने, खेलने–कूदने, खाने–पीने, क्या करना है?, क्या नहीं करना है? आदि पर प्रतिबन्ध लगा दिया जाता है। सिमोंन द वोउवर अपनी पुस्तक द सेकेण्ड सेक्स में लिखती हैं 'स्त्री पैदा नहीं होती बनाई जाती है'। सिमोन के इस पंक्ति पर गौर करें तो हमें सीधे तौर पर इसका जिम्मेदार समाज नजर आता है। प्रायः सभी परिवार में ऐसा होता है कि लड़की के जन्म लेते ही उसके साथ भेद–भाव शुरु कर दिया जाता है और वह खुल कर अपने अधिकारों की मांग भी नहीं कर पाती। कई लड़कियों को जीवन साथी चुनने पर उनकी अनुमति लेना भी उचित नहीं समझा जाता। जब रमा की शादी पक्की की जा रही थी तो रमा के साथ भी यही हुआ जब उसकी माँ उसकी बुआ से कहती है। "तुम तो बात पक्की कर दो। रमा से तो पूछ लो, अरे उससे क्या पूछना।"[14]

रमा की दोनों बेटियाँ दूर चले जाने पर रमा अपने ही घर में अकेला महसूस करने लगती है और अपनी बेटी रसिका के साथ रह कर नौकरी करने का निर्णय कराती है। जब उसका पति उसे रोकने की कोशिश करता है। तो रमा कहती है। आपने मुझे कई बार जाने से मना किया है। जबाब में रमा का पति कहता है।"मना तो मैं अब भी कर सकता हूँ। जरुर कर सकते हो, पर शायद मुझे रोक नहीं पाएगे।"[15] स्त्री जब तक ही बंधन में हैं जब तक वह

जागरूक होकर अपने अधिकारों की मांग ना करे, लेकिन जैसे ही लड़की जन्म लेती है उसको स्त्री बनाने की प्रक्रिया शुरू कर दी जाती और वह शोषण का शिकार होती चली जाती है। शोषण के विरुद्ध आवाज उठाना भूल जाती है। स्त्रियाँ हजारों वर्षों से इसी प्रकार से शोषित उपेक्षित होती चली आ रही है। आधुनिक स्त्रियाँ आत्मनिर्भर, जागरूक, शिक्षित, सशक्त बन कर अपनी अस्मिता की तलाश में पुरुषवादी बन्धनों से बाहर निकल कर कार्य कर रहीं हैं। पुरुषवादी सत्ता में शिथिलता जरुर आई है लेकिन अभी भी बहुधा स्त्रियाँ शोषित, उपेक्षित दोयम दर्जे की ही हैं। पुरुषसत्तात्मक समाज में एक पुरुष अपनी पत्नी के सुझावों से कार्य करे तो उसे समाज में निम्न दर्जे का समझा जाता है। इस प्रकार से पुरुषों को समाज ने हमेशा स्त्रियों की तुलना में श्रेष्ठता का दर्जा दिया। स्त्रियों को हर संभव दबाने की कोशिश की।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. वर्मा, महादेवी, (2015) श्रृंखला की कड़ियाँ, लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद, पृष्ठ संख्या– 55
2. इण्डिया हिंदी ब्लॉग
3. जोशी, मालती, (2016) मालती जोशी की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ, साक्षी प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ संख्या– 41
4. वही पृष्ठ संख्या– 44
5. वही पृष्ठ संख्या– 44
6. सिमोन द वोउवार, अनुवाद प्रभा खेतान, (1992) स्त्री उपेक्षिता, पृष्ठ संख्या– 212
7. जोशी, मालती, (2016) मालती जोशी की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ, साक्षी प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ संख्या– 53
8. वही पृष्ठ संख्या– 47
9. वाही पृष्ठ संख्या– 47
10. वही पृष्ठ संख्य– 45
11. वही पृष्ठ संख्यदृ 48
12. यादव, राजेंद्र, (2015) आदमी की निगाह में औरत, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ संख्या– 19
13. जोशी, मालती,(2016) मालती जोशी की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ, साक्षी प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ संख्या– 59
14. वही, पृष्ठ संख्या– 50
15. वही, पृष्ठ संख्या– 62